17 जुलाई 2012, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J.P.C / FN-32 / 2012-14

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे

जी-जागरण पर

प्रतिदिन प्रात: 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 35, अंक : 8 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

जुलाई (द्वितीय), 2012 (वीर नि. संवत्-2538) सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

साप्ताहिक संगोष्ठी संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय में साप्ताहिक गोष्ठियों की अक्षुण्ण परम्परा का उद्घाटन दिनांक 8 जुलाई को प्रात:काल किया गया।

समारोह की अध्यक्षता पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल (प्राचार्य-श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय) ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री नवीनजी बज (पूर्व अध्यक्ष-समाजशास्त्र राजस्थान विश्वविद्यालय) एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री दिलीपभाई शाह मुम्बई, श्री शान्तिलालजी जैन अलवरवाले जयपुर, श्री ताराचंदजी सोगानी जयपुर उपस्थित थे। विद्वानों के अन्तर्गत ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री एवं पण्डित संतोषजी शास्त्री उपस्थित थे। मंचासीन सभी महानुभावों का स्वागत शास्त्री तृतीय वर्ष के विद्यार्थियों द्वारा किया गया।

इस अवसर पर पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील ने विचार गोष्ठी की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि छात्रों को भाषणकला में पारंगत करने हेतु इन गोष्ठियों का आयोजन किया जाता है, इनमें महाविद्यालय में अध्ययनरत छात्र किसी एक विषय के एक बिन्दु पर मात्र 5 मिनिट में विचार प्रस्तुत करते हैं, जिसमें विषय का सांगोपांग वर्णन करना एक विशिष्ट कौशल की बात है।

ब्र. यशपालजी ने विद्यार्थियों को मार्गदर्शन देते हुए कहा कि सभी विद्यार्थी विषय का गंभीरता से अध्ययन कर एवं बिना देखे अपने विषय को प्रस्तुत करें। श्री नवीनजी बज ने विद्यार्थियों को जैनधर्म को गहराई से पढने के लिए विशेष प्रेरित किया। अध्यक्षीय भाषण के अन्तर्गत टोडरमल महाविद्यालय के प्राचार्य महोदय ने विद्यार्थियों को विषय का सांगोपांग अध्ययन करने हेतु प्रेरित किया।

समारोह का मंगलाचरण मयंक जैन अमरमऊ ने एवं संचालन पण्डित सोनूजी शास्त्री (अधीक्षक) ने किया।

सायंकालीन कार्यक्रम के अन्तर्गत साप्ताहिक गोष्ठियों की शृंखला में **'पंचपरमेष्ठी : एक अनुशीलन'** विषय पर इस सत्र की प्रथम गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी की अध्यक्षता पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल (प्राचार्य-श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय) ने की।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में उपाध्याय वर्ग से अभिषेक जैन हीरापुर एवं शास्त्री वर्ग से जीवेश जैन पिड़ावा का चयन किया गया।

गोष्ठी का मंगलाचरण अंकित जैन भिण्ड (उपाध्याय कनिष्ठ) ने एवं संचालन ज्ञायक समैया एवं सर्वज्ञ भारिल्ल (शास्त्री तृतीय वर्ष) ने किया।

अष्टाह्निका महापर्व सानन्द संपन्न

1. नागपुर (महा.) : यहाँ इतवारी नेहरु पुतला स्थित जिनमंदिर में अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर दिनांक 26 जून से 3 जुलाई तक नंदीश्वर पंचमेरु विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर एवं पण्डित रवीन्द्रजी महाजन के प्रवचनों का लाभ मिला।

विधि-विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित मनीषजी सिद्धांत नागपुर एवं पण्डित आदेशजी बोरालकर द्वारा संपन्न हुये।

2. पुणे (महा.) : यहाँ अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर दिनांक 26 जून से 3 जुलाई तक अरहंत दि. जैन ट्रस्ट के तत्त्वावधान में प्रात: जिनेन्द्र पूजन का आयोजन किया गया, तत्पश्चात् पण्डित जितेन्द्रजी राठी द्वारा नन्दीश्वर द्वीप की जयमाला पर प्रवचन किये गये।

3. मुम्बई : यहाँ अष्टाह्निका महापर्व के पावन प्रसंग पर दिनांक 26 जून से 3 जुलाई तक मुम्बई के विभिन्न उपनगरों में विद्वानों को आमंत्रित कर व्याख्यानों का आयोजन किया गया, जिसके अन्तर्गत **सीमंधर जिनालय** में पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर, **दादर** में पण्डित सौरभजी शास्त्री, **मलाड** में ब्र. हेमचंदजी 'हेम', **मलाड (एवरशाइन नगर)** में पण्डित विपिनजी शास्त्री, **बोरीवली** में पण्डित अश्विनभाई शाह, **दहीसर** में पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, **भायंदर** में पण्डित जयकुमारजी बारां एवं **वसई** में पण्डित रीतेशजी डडूका का स्थानीय समाज को लाभ मिला।

4. अजमेर (राज.) : यहाँ श्री वीतराग-विज्ञान स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट द्वारा प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर दिनांक 26 जून से 3 जुलाई तक श्री सैंतालीस शक्ति विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित देवेन्द्रकुमारजी मंगलायतन द्वारा सैंतालीस शक्तियों एवं समयसार पर विशेष प्रवचन हुये।

विधि-विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित कान्तिकुमारजी इन्दौर द्वारा संपन्न कराये गये।

5. रतलाम (म.प्र.) : यहाँ महापर्व के अवसर पर चौबीस तीर्थंकर विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित श्रेणिकजी जबलपुर द्वारा मोक्षमार्गप्रकाशक के पुरुषार्थ से मोक्षप्राप्ति विषय पर प्रवचनों का लाभ मिला।

विधि-विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित श्रेणिकजी जबलपुर द्वारा संपन्न कराये गये।

सम्पादकीय –

पंचास्तिकाय : अनुशीलन

81 – पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

गाथा – १४२

विगत गाथा में संवरतत्व का स्वरूप कहा।

अब प्रस्तुत गाथा में सामान्यरूप से संवर का ही और कथन करते हैं।

मूल गाथा इसप्रकार है –

जस्स ण विज्जदि रागो दोसो मोहो व सव्वदव्वेसु।
णासवदि सुहं असुहं समसुहदुक्खस्स भिक्खुस्स।।१४२।।

(हरिगीत)

जिनको न रहता राग-द्वेष अर मोह सब परद्रव्य में।
आस्रव उन्हें होता नहीं, रहते सदा समभाव में ।।१४२।।

जिसे सर्वद्रव्यों के प्रति राग–द्वेष एवं मोह नहीं है, उस भिक्षु को निर्विकार चैतन्यपने के कारण सम सुख–दुःख हैं, उसे शुभ व अशुभ कर्म का आस्रव नहीं होता।

आचार्य अमृतचन्द्र टीका में कहते हैं कि जिसे समग्र परद्रव्यों के प्रति राग–द्वेष व मोहभाव नहीं होते, उस भिक्षु (मुनि) को, जोकि निर्विकार चैतन्यपने के कारण सम सख–दुःख हैं, उसे शुभाशुभ कर्म का आस्रव नहीं होता, परन्तु संवर ही होता है। इसलिए यहाँ मोह–राग–द्वेष परिणाम का निरोध भाव संवर है और योग द्वारा प्रविष्ट होने वाले पुद्गलों के शुभाशुभ कर्म रूप परिणामों का निरोध द्रव्य संवर है।

कवि हीरानन्दजी इसी के भाव को काव्य में कहते हैं –

(सवैया इकतीसा)

रागरूप दोषरूप मोहरूप भाव जाकै,
सुपर दरब विषै नैक नाहिं भावै हैं।
निर्विकार चेतना–सुभाव एक आतमीक,
दुःख–सुख न्यारा सोई भिक्षुक कहावै है।।
ताकै सुभासुभ रूप कर्म कोई आवै नाहिं,
संवर सु होता जाइ गुन कौं बढ़ावै है।
भावरूप संवर तैं द्रव्यकर्म संग रहै,
आतमा सरूप गामी आप मांहि आवै है।।१३३।।

(दोहा)

जो आतम आतम विषै, आतम लखि थिर होइ।
सो संवर संवरन है, सकल करम कौ जोइ।।१३४।।

उक्त छन्दों में कवि कहते हैं कि जिसके राग–द्वेष–मोह नहीं हैं, मात्र एक निर्विकार चेतना स्वभाव है, सांसारिक सुख–दुःख से जो भान हो गये हैं, उनके शुभाशुभ कर्मों का आस्रव नहीं होता। उनके द्रव्य संवर तथा संवर होता है। जो आत्मा के स्वरूप में स्थिर हो गये हैं, उनके संवर होता है।

गुरुदेव श्री कानजीस्वामी व्याख्यान करते हुए कहते हैं कि जिस पुरुष को समस्त परद्रव्यों में प्रीति भाव, द्वेषभाव तथा तत्त्वों की अश्रद्धा रूप मोहभाव नहीं है तथा समान है सुख–दुःख जिसके – ऐसे महामुनि के शुभरूप व पापरूप पुद्गल द्रव्य आस्रव को प्राप्त नहीं होते।

यहाँ छटवें–सातवें गुणस्थान में झूलते मुनि की अपेक्षा से कथन किया है। कहते हैं कि महामुनियों को पर के कारण प्रमोद नहीं होता, किन्तु अपने स्वयं के कारण सर्वज्ञ भगवान के प्रति शुभ राग आता है। मुनिराजों को सम्पूर्ण पर पदार्थ ज्ञान के ज्ञेय होते हैं, उनकी अपने स्वभाव में लीनता है, इसकारण उनके राग–द्वेष उत्पन्न नहीं होता। इसी प्रकार मुनियों को तत्त्व की अश्रद्धा भी नहीं होती।

वे यह भी नहीं मानते कि शरीर की निरोगता में ही धर्म हो सकता है तथा रोगी शरीर में रोग हो तो धर्म नहीं हो सकता। इसी तरह सुख–दुःख में भी मुनियों को समान भाव वर्तता है।''

इसप्रकार गुरुदेव श्री कानजीस्वामी ने वादिराज आदि मुनियों के दृष्टान्त देकर सच्चे मुनियों के स्वरूप पर विशेष प्रकाश डाला है। ●

गाथा – १४३

विगत गाथा में सामान्यरूप से संवर का स्वरूप कहा है।

अब प्रस्तुत गाथा में विशेषरूप से संवर के स्वरूप का कथन हैं।

मूल गाथा इसप्रकार है –

जस्स जदा खलु पुण्णं जोगे पावं च णत्थि विरदस्स।
संवरणं तस्स तदा सुहासुहकदस्स कम्मस्स।।१४३।।

(हरिगीत)

जिस व्रती के त्रय योग में जब पुण्य एवं पाप ना।
उस व्रती के उस भाव से तब द्रव्यसंवर वर्तता ।।१४३।।

जिस मुनि को विरत रहते हुए जब योग में पुण्य और पाप नहीं होते, तब उसे शुभाशुभ भावकृत कर्मों का संवर होता है।

आचार्य अमृतचन्द्र टीका में कहते हैं कि जिस योगी को विरत अर्थात् सर्वथा निवृत्त वर्तते हुए मन–वचन और काय सम्बन्धी क्रिया में शुभ परिणाम रूप पुण्य तथा अशुभ परिणाम रूप पाप नहीं होते, तब उसे शुभाशुभ भाव निमित्तक द्रव्यकर्मों का अभाव होने के कारण द्रव्य संवर होता है और शुभाशुभ परिणाम के निरोध पूर्वक भाव संवर होता है।

कवि हीरानन्दजी इसी भाव को काव्य में कहते हैं –

(दोहा)

पुण्य–पाप नहिं जोग मैं, जा मुनि कै जिस बार।
ताकै तब संवरन है, करम सुभासुभ द्वार।।१३५।।

(सवैया इकतीसा)

सबतैं निवृत्त मुनि विरति कै जोगौं विषै,
सुभासुभ रूप परिनाम का निवरना।
जाही समै होइ ताहीसमै सुभासुभ रूप,
द्रव्य कर्म संवर है कर्म का अकरना।।

कारन अभाव होतैं कारज अभाव होइ,
कारन कै होतैं काज लोक मैं समरना।
भावरूप संवर तैं द्रव्यरूप संवर है,
भेदग्यान मारग तैं मोख मैं उतरना।।१३६।।

''संवर के स्वरूप का कथन करते हुये कवि कहते हैं कि जब शुभाशुभ भाव का निवारण होता है, तभी शुभाशुभरूप द्रव्यकर्मों का निवारण हो जाता है। द्रव्यकर्म का अभाव होने से भावकर्म के अभाव रूप संवरदशा प्रगट हो जाती है; क्योंकि कारण का अभाव होने कार्य का भी अभाव हो जाता है।

गुरुदेव श्री कानजी स्वामी अपने व्याख्यान में कहते हैं कि जो जीव निश्चय से परद्रव्यों की तरफ उपेक्षाभाव रखते हैं, उन्हें संवर होता है। यहाँ मुनियों की अपेक्षा से कथन है। दया–दान आदि का भाव शुभ है तथा हिंसा, झूठ आदि के भाव अशुभ हैं। जब मुनियों के मन–वचन–काया के निमित्त से शुभाशुभ भाव होते नहीं हैं तथा जब स्वभाव में लीनता वर्तती है, उस समय जो आते हुए कर्म रुक जाते हैं, वह द्रव्य संवर है।

तात्पर्य यह है कि जब महामुनि के सर्व प्रकार से शुभाशुभ की निवृत्ति होती है, तब आगामी कर्मों का निरोध होता है। शुद्धात्मा का अवलंबन लेने से राग–द्वेष की उत्पत्ति ही नहीं होती। इसे ही भावकर्मों का नाश होना कहते हैं तथा उनके निमित्त से द्रव्यकर्म स्वयं नहीं आते।

इसप्रकार अत्यन्त सरल भाषा में संवर का विशेष स्वरूप कहा। ●

गाथा – १४४

विगत गाथा में संवर का विशेष स्वरूप कहा।

अब प्रस्तुत गाथा में निर्जरा पदार्थ की व्याख्या करते हैं।

मूल गाथा इसप्रकार है –

संवरजोगेहिं जुदो तवेहिं जो चिट्ठदे बहुविहेहिं।
कम्माणं णिज्जरणं बहुगाणं कुणदि सो णियदं।।१४४।।

(हरिगीत)

शुद्धोपयोगी भावयुत जो वर्तते हैं तपविषैं।
वे नियम से निज में रमें बहु कर्म को भी निर्जरें।।१४४।।

जो जीव संवर और योग से युक्त होता है, वह बहुविधतपों सहित वर्तता है, अतः वह नियम से अनेक कर्मों की निर्जरा करता है।

आचार्य श्री अमृतचन्द्र टीका में कहते हैं कि संवर अर्थात् शुभाशुभ परिणाम का निरोध और योग अर्थात् शुद्धोपयोग; इन दोनों से युक्त पुरुष अनशन, अवमौदर्य, वृत्तिपरिसंख्यान, रसपरित्याग, विविक्त शय्यासन तथा कायक्लेशादि भेदोंवाले बहिरंग तपों सहित और प्रायश्चित, विनय, वैयावृत्त, स्वाध्याय, व्युत्सर्ग तथा ध्यान भेदों वाले अन्तरंग तपों सहित वर्तता है। वह पुरुष वास्तव में अनेक कर्मों की निर्जरा करता है। इसलिए यहाँ इस गाथा में ऐसा कहा है कि 'कर्म की शक्ति को क्षीण करने में समर्थ अन्तरंग और बहिरंग तपों द्वारा बढ़ा हुआ शुद्धोपयोग भाव निर्जरा है और उस शुद्धोपयोग के निमित्त से नीरस हुए उपार्जित कर्म पुद्गलों का एकदेश क्षय होना द्रव्य निर्जरा है।

इसी बात को कवि हीरानन्दजी काव्य में कहते हैं –

(दोहा)

संवर–जोग विमल सहित, विविध तपोविधि धार।
बहुत करम निर्जर करन, सो मुनि त्रिभुवन सार।।१३७।।

(सवैया इकतीसा)

आस्रव निरोध संवर और सुद्धोपयोग,
इन दौनौं सेती सदर जो मुनि चरतु हैं।
बाहिर–अभ्यन्तर है बारह प्रकार तप,
तातैं कर्म निर्जरा सौ बंधन गरतु है।।
तातैं कर्मबीज नास करने समर्थ एक,
सुद्ध उपयोग भाव निर्जरा करतु है।
ताकै परभाव सेती कर्म रस नीरस है,
सोई दर्व निर्जरा है, मोख कौं धरतु है।।१३८।।

(दोहा)

पूरव–संचित करम कौ एकोदेस विनास।
सो निर्जरा कहान है, ज्यौं जीरन–आवास।।१३९।।

उक्त पद्यों में कवि कहते हैं कि उन मुनियों का जीवन धन्य है जो मुनि संवर और त्रियोग की निर्मलता के साथ नाना प्रकार के तप करते हैं, और कर्मों की निर्जरा करते हैं। आगे कवि ने कहा – आस्रव का निरोध संवर है। मुनि का आचरण शुद्धोपयोग रूप तथा संवररूप होता है।

अंतरंग व बहिरंग बारह प्रकार का तप निर्जरा का कारण है; क्योंकि उसके प्रभाव से कर्मों का रस नीरस हो जाता है। इसप्रकार वही भाव निर्जरा सहित द्रव्य निर्जरा मोक्ष का कारण बनती है।

गुरुदेव श्री कानजीस्वामी कहते हैं कि 'जो भेद विज्ञानी शुभाशुभ आस्रव के निरोध रूप संवर तथा शुद्धोपयोगरूप योग सहित अन्तरंग–बहिरंग तप करते हैं, वे निश्चय से बहुत कर्मों की निर्जरा करते हैं।

भेदविज्ञानी जीवों को योग होता है, आत्मा के भान बिना ध्यान किसका/कैसा? आत्मा में समय–समय पर संसारावस्था में विकार होता है, उसमें कर्म निमित्त होते हैं। ऐसा होते हुए भी 'आत्मा द्रव्यरूप से शुद्ध है' ज्ञानी को ऐसा भान होता है। ऐसे भान बिना योग (ध्यान) नहीं हो सकता।

सुदेव–कुदेवादि को समान मानना समभाव नहीं है, बल्कि सुदेव को सुदेव और कुदेव को कुदेव जानने का नाम समभाव है। जो ऐसे वर्तमान पर्याय के अन्तर को नहीं जानते, उसे पर से व राग से आत्मा जुदा है – ऐसा विवेक करना नहीं आता।

सुदेव व कुदेव के बीच विवेक हो, जड़ व चैतन्य का विवेक

(शेष पृष्ठ 5 पर)

देशभर में आध्यात्मिक शिक्षण शिविरों की धूम

मई एवं जून माह में ग्रीष्मकालीन अवकाश के अवसर पर पूरे देशभर में ग्रुप शिविरों एवं बाल संस्कार शिविरों के माध्यम से अभूतपूर्व तत्त्वप्रचार हुआ। विगत अंकों में देवलाली, जबलपुर, खड़ैरी, उज्जैन, नागपुर, भिण्ड, औरंगाबाद, बड़ौत, इन्दौर, जयपुर एवं सिद्धायतन–द्रोणगिरी में लगाये गये ग्रुप एवं बाल संस्कार शिविरों के समाचार प्रकाशित किये जा चुके हैं। अब यहाँ ग्वालियर, बुलढाणा, अलवर एवं अजमेर में लगाये गये ग्रुप एवं बाल संस्कार शिविरों के संक्षिप्त समाचार प्रकाशित किये जा रहे हैं। इन दो महिनों में सैंकड़ों स्थानों पर सैकड़ों विद्वानों द्वारा हजारों साधर्मियों ने जैनधर्म के संस्कार ग्रहण किये एवं ज्ञान गंगा में स्नान किया।

1. ग्वालियर (म.प्र.) : यहाँ दि. जैन पार्श्वनाथ ट्रस्ट दानाओली में अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन ग्रेटर के तत्त्वावधान में दिनांक 2 से 9 जून तक जैन नैतिक संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित पदमचंदजी द्वारा प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त पण्डित ऋषभजी शास्त्री ललितपुर, पण्डित विनीतजी शास्त्री अलीगढ व स्थानीय विद्वान पण्डित पवनजी शास्त्री, पण्डित अभयजी शास्त्री, कु. रश्मि, कु. युक्ति जैन व रवि जैन द्वारा कक्षाओं का लाभ मिला।

शिविर में प्रतिदिन जिनेन्द्र–पूजन, कक्षा, भक्ति एवं ज्ञानवर्धक अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। दोपहर में फोन इन प्रोग्राम संचालित किया गया। शिविर में लगभग 350 लोगों ने धर्मलाभ लिया।

शिविर का उद्घाटन श्री सुशीलजी जैन (मंत्री–मुमुक्षु मण्डल) द्वारा एवं ध्वजारोहण श्री सुनीलजी जैन (मानिका गारमेन्ट्स) द्वारा किया गया।

इस अवसर पर नवगठित अ. भा. जैन युवा फैडरेशन ग्रेटर ग्वालियर का शपथ ग्रहण व समापन समारोह 09 जून को सम्पन्न हुआ। इसके 64 सदस्यों (सभी पदाधिकारियों सहित) को तिलक व अंग वस्त्र से सम्मानित कर जिनवाणी की प्रभावना की शपथ पण्डित महेशजी ने दिलायी। तत्पश्चात् सम्पूर्ण कार्यक्रम के निर्देशक, अ. भा. जैन युवा फैडरेशन म.प्र. के प्रदेश संयोजक एवं ग्रेटर ग्वालियर शाखा के महामंत्री पण्डित शुद्धात्मप्रकाश शास्त्री (ओमकार शर्ट्स) ग्वालियर को शिक्षण शिविरों के आयोजन व समय–समय पर सामाजिक एवं धार्मिक गतिविधियों में विशेष योगदान हेतु सम्मानित किया गया। इसके अन्तर्गत पण्डित महेशजी ने तिलक लगाकर व अंग वस्त्र पहिनाकर एवं श्री मुकेशजी (जैना ज्वेलर्स) ने गिफ्ट भेंट कर स्वागत किया।

अन्त में फैडरेशन द्वारा रविवारीय पाठशाला व फोन इन प्रोग्राम संपूर्ण ग्वालियर में संचालित करने की घोषणा की गई।

2. बुलढाणा (महा.) : यहाँ गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी श्री कुन्दकुन्द कहान प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन एवं भारतीय जैन संघटना बुलढाणा के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 2 से 8 मई तक जैन ज्ञान संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर ध्रुवधाम से पधारे पण्डित करणजी शास्त्री, पण्डित प्रदीपजी शास्त्री, पण्डित बाहुबलीजी शास्त्री, पण्डित अक्षयजी शास्त्री, पण्डित अभिनन्दनजी शास्त्री एवं पण्डित रोहितजी जैन द्वारा जिनवाणी का प्रचार–प्रसार व रसास्वादन कराने का कार्य बहुत उत्साहपूर्वक किया गया।

यह शिविर महाराष्ट्र के विदर्भ व मराठवाडा प्रांत के बुलढाणा, वरुड, विहीगांव, अंबड, जालना, देवलगांवराजा आदि 6 स्थानों पर लगाया गया, जिसमें लगभग 215 विद्यार्थियों सहित 340 साधर्मियों ने जैनत्व के संस्कार ग्रहण किये।

दिनांक 8 मई को शिविर का सामूहिक समापन समारोह बुलढाणा स्थित जैन स्थानक भवन में रखा गया। समारोह की अध्यक्षता कर रहे श्री परागजी संचेती ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि इस वर्ष की भांति प्रतिवर्ष जिनवाणी के प्रचार–प्रसार में बुलढाणा समाज द्वारा गतिविधियाँ चलती रहेगी।

शिविर का सफल संयोजन पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री सोनगढ, पण्डित सतीशजी शास्त्री ध्रुवधाम एवं पण्डित रवीन्द्रजी शास्त्री अंबड ने किया। **– सतीश शास्त्री ध्रुवधाम**

3. अलवर (राज.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन एवं अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 18 से 27 मई तक आध्यात्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा के अतिरिक्त श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय, अकलंक शिक्षण संस्थान बांसवाड़ा एवं श्री धरसेनाचार्य दि. जैन सिद्धांत महाविद्यालय कोटा के विद्यार्थियों के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला। यह शिविर लगभग 30 स्थानों पर लगाया गया, जिसमें सैंकड़ों साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

शिविर के संयोजक श्री शशिभूषणजी जैन एवं निर्देशक पण्डित अजितजी शास्त्री थे।

4. अजमेर (राज.) : यहाँ श्री वीतराग विज्ञान स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में वैशाली नगर स्थित नवनिर्मित जिनमंदिर ऋषभायतन में युवा प्रकोष्ठ की ओर से 22वाँ ग्रीष्मकालीन आध्यात्मिक बाल, युवा एवं प्रौढ चेतना शिविर का दिनांक 17 से 25 जून तक आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, पण्डित अश्विनजी नानावटी बांसवाड़ा, पण्डित विवेकजी शास्त्री सागर एवं पण्डित अपूर्वजी शास्त्री इन्दौर के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला।

शिविर के उद्घाटनकर्ता प्रो. राजेन्द्रकुमारजी बोहरा एवं ध्वजारोहणकर्ता श्री सुरेन्द्रकुमारजी गंगवाल थे। विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. संजीवजी जैन उपस्थित थे।

ग्रीष्मावकाश में लगने वाले शिविरों का विवरण

कुल ग्रुप शिविर	– 5
कुल बाल संस्कार शिविर	– 9
सभी ग्रुप शिविरों के कुल स्थान	– 269
सभी शिविरों में लाभ लेने वाले कुल साधर्मी	– 34000
विद्वानों का लाभ प्राप्त हुआ	– 514

इस अवसर पर मोक्षमार्गप्रकाशक, छहढाला एवं बालबोध पाठमाला भाग–1, 2 के आधार पर प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ उपस्थित जनसमुदाय को मिला।

इस शिविर में लगभग 110 शिविरार्थियों ने आध्यात्मिक ज्ञान का लाभ लिया। सभी बालक–बालिकाओं को पुरस्कार दिये गये।

शिविर के अन्तिम दिन तीर्थस्थल नारेली की यात्रा का भी लाभ सभी शिविरार्थियों को प्राप्त हुआ।

अन्तिम दिन ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री नरेशजी लुहाड़िया ने सभी का आभार प्रदर्शन किया।

हार्दिक बधाई !

टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक खड़ैरी (म.प्र.) निवासी चि. चैतन्य शास्त्री का शुभ विवाह बिलाई (म.प्र.) निवासी सौ. पिंकी जैन के साथ दिनांक 30 मई को संपन्न हुआ। इस उपलक्ष्य में जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग–विज्ञान हेतु 100–100/– रुपये प्राप्त हुये।

टोडरमल महाविद्यालय एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई!

कहानी... धर्म कार्य कब करना ?

एक राजा था; उसकी एक रानी, एक पुत्री और एक दासी थी। जैनधर्म के रंग (प्रभाव) में रंगा यह पूरा परिवार वैरागी था, यहाँ तक कि दासी भी वैराग्य में जागृत थी।

एक बार किसी प्रसंग पर राजा वैराग्य से कहते हैं कि ''हे जीव ! तू शीघ्र ही धर्म–साधन कर ले। यह जीवन तो क्षणभंगुर है। दो–चार दिन का ही है। इसका क्या भरोसा ?''

उसी समय रानी बोली –''महाराज ! आप भूल कर रहे हैं क्योंकि दो–चार दिन का भी क्या भरोसा ? रात को हँसते हुए सोते हैं और सुबह जीवन–लीला ही समाप्त हो जाती है, इसलिए कल के भरोसे नहीं रहना चाहिये।''

उसी समय पुत्री गंभीरता से कहती है–''पिताजी और माताजी !! आप दोनों भूल कर रहे हैं। दो–चार दिन या सुबह–शाम का भी क्या भरोसा ? आँख की एक पलक झपकने में ही कौन जाने क्या हो जाये ?''

दासी भी वहीं खड़ी–खड़ी यह धर्म–चर्चा सुन रही थी। अन्त में वह कहती है – ''अरे, आप सब भूल कर रहे हैं। आँख के झपकने में तो कितना समय (अन्तर्मुहूर्त) चला जाता है...इतने समय का भी क्या भरोसा ? हमें दूसरे समय की भी राह देखे बिना वर्तमान समय में ही अपनी आत्मा को समझकर आत्महित में सावधान होना चाहिये। आत्महित का काम दूसरे समय पर नहीं छोड़ना चाहिये। एक समय का भी विलम्ब करना योग्य नहीं है''

इस छोटी सी कहानी से यही शिक्षा लेनी चाहिये कि आत्महित कब करना ?

आज.....आज.....और.....अभी।

फैडरेशन की नवीन शाखा का गठन

ग्वालियर (म.प्र.) : यहाँ ग्रेटर में अ. भा. जैन युवा फैडरेशन की नवीन शाखा का गठन दिनांक 8 जून को किया गया।

इसके अन्तर्गत **अध्यक्ष** – सुनील जैन (मोनिका गारमेन्ट्स), **निदेशक व महामंत्री** – पण्डित शुद्धात्मप्रकाश शास्त्री (प्रदेश संयोजक–जैन युवा फैडरेशन म.प्र.), **उपाध्यक्ष** – विनय जैन, मोहन जैन, अनिल जैन व अमित जैन, **सहमंत्री** – शीतल जैन, हेमन्त जैन, अभिषेक व अंकित जैन, **मीडिया प्रभारी** – सचिन जैन व गौरव जैन, **पाठशाला मंत्री** – पण्डित पवनजी शास्त्री, अमन जैन व रवि जैन, **साज सज्जा मंत्री** – कु. रश्मि, कु. आकृति, कु. बबली व कु. निहारिका जैन, **सांस्कृतिक मंत्री** – अभिषेक 'चेतन', नन्दन जैन, हेमन्त जैन व वैभव जैन, **मुख्य परामर्शदाता** – पण्डित महेशजी ग्वालियर, पण्डित उत्तमचंदजी हनुमाननगर, पण्डित श्यामलालजी लाला का बाजार, पण्डित अजितजी 'अचल' व पण्डित सुनीलजी शास्त्री मुरार, **संरक्षकगण** – सतीश जैन रविनगर, मुकेश जैन (जैना ज्वैलर्स), शीतल जैन विजयवर्गीय, महेन्द्र जैन (अरिहंत पेढा), सुशील जैन (मंत्री–मुमुक्षु मण्डल), महेन्द्र जैन (जैन स्टोन) व महेशचंदजी जनकगंज चुने गये।

मुक्त विद्यापीठ के छात्र ध्यान दें –

उत्तर पुस्तिकाएँ तत्काल भेजें

द्विवर्षीय विशारद कोर्स उपाध्याय परीक्षा एवं त्रिवर्षीय सिद्धांत कोर्स शास्त्री परीक्षा के प्रथम सेमेस्टर की परीक्षाएँ जून 2012 में संपन्न हो चुकी हैं। जिन परीक्षार्थियों ने अभी तक अपनी उत्तर पुस्तिकायें नहीं भेजी हों, कृपया वे तत्काल भिजवा देवें, ताकि रिजल्ट एवं प्रमाण–पत्र जैसे कार्य समय पर पूर्ण हो सकें।

– ओ.पी.आचार्य (प्रबंधक–श्री टोडरमल जैन मुक्त विद्यापीठ)

(पृष्ठ 3 का शेष...)

जाने, विकार व अविकार में अन्तर जाने, बन्ध व अबन्ध के बीच भेद जाने, वे भेद विज्ञानी हैं। उन्हें शुभाशुभ भाव उत्पन्न नहीं होते। उसे संवर होता है। जिसे संवर है, उसे आत्मा में शुद्ध उपयोग रूप जुड़ान से तथा अंतरंग–बहिरंग तप से जो शुद्धता होती है, उस शुद्धता की बृद्धि रूप एवं अशुद्धता के व्ययरूप भाव निर्जरा होती है तथा जो पुराने कर्म क्षय हो जाते हैं उस अपेक्षा द्रव्य निर्जरा होती है। जीव का बारह प्रकार का तप उस द्रव्य निर्जरा में निमित्त होता है।

ज्ञानी जीव को जितना शुद्धोपयोग वर्तता है, उतने प्रमाण में कर्मों की निर्जरा होती है।

इसप्रकार इस गाथा में संवर की सामान्य चर्चा करते हुए निर्जरा एवं उनके भेद द्रव्य निर्जरा एवं भाव निर्जरा को समझाया है तथा यह बताया है कि अंतरंग–बहिरंग तपों द्वारा निर्जरा होती है, अतः ज्ञानी को संवरपूर्वक यथा साध्य निर्जरा भी होती है। वह बुद्धिपूर्वक अन्तरंग बहिरंगतप करता ही है। ●

रहस्य : रहस्यपूर्ण चिट्ठी का

९४ – डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

तीसरा प्रवचन

संतप्त मानस शांत हों, जिनके गुणों के गान में।
वे वर्द्धमान महान जिन, विचरें हमारे ध्यान में।।

आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी कृत रहस्यपूर्णचिट्ठी की चर्चा चल रही है। अबतक पत्र के आरंभ में लिखी जानेवाली औपचारिक चर्चा ही हुई है; अब प्रश्नों के उत्तर आरंभ होते हैं।

पण्डित टोडरमलजी लिखते हैं –

''अब, स्वानुभवदशा में प्रत्यक्ष–परोक्षादिक प्रश्नों के उत्तर स्वबुद्धि अनुसार लिखते हैं।

वहाँ प्रथम ही स्वानुभव का स्वरूप जानने के निमित्त लिखते हैं –

जीव पदार्थ अनादि से मिथ्यादृष्टि है। वहाँ स्व–पर के यथार्थरूप से विपरीत श्रद्धान का नाम मिथ्यात्व है तथा जिसकाल किसी जीव के दर्शनमोह के उपशम–क्षय–क्षयोपशम से स्व–पर के यथार्थ श्रद्धानरूप तत्त्वार्थश्रद्धान हो, तब जीव सम्यक्त्वी होता है; इसलिए स्व–पर के श्रद्धान में शुद्धात्मश्रद्धानरूप निश्चयसम्यक्त्व गर्भित है।

तथा यदि स्व–पर का श्रद्धान नहीं है और जिनमत में कहे जो देव, गुरु, धर्म उन्हीं को मानता है; व सप्त तत्त्वों को मानता है; अन्यमत में कहे देवादि व तत्त्वादि को नहीं मानता है; तो इसप्रकार केवल व्यवहारसम्यक्त्व से सम्यक्त्वी नाम नहीं पाता; इसलिए स्व–पर भेदविज्ञानसहित जो तत्त्वार्थश्रद्धान हो उसी को सम्यक्त्व जानना।''[१]

स्वानुभवदशा में सम्यग्दर्शन–ज्ञान–चारित्र की उत्पत्ति होती है। मुलतानवाले भाइयों का मूल प्रश्न ही स्वानुभव दशा में प्रत्यक्ष–परोक्षादि ज्ञान की स्थिति के बारे में है; अत: सर्वप्रथम स्वानुभव को समझना आवश्यक है। **स्वानुभव को समझने के लिए स्वानुभवदशा में उत्पन्न होनेवाले सम्यग्दर्शन–ज्ञान–चारित्र को समझना आवश्यक है। अत: सर्वप्रथम पण्डितजी सम्यग्दर्शन की चर्चा आरंभ करते हैं।**

स्व–पर के भेदविज्ञानपूर्वक यथार्थ श्रद्धानरूप तत्त्वार्थश्रद्धान ही सम्यग्दर्शन है। इस सम्यग्दर्शन में शुद्धात्मा के श्रद्धानरूप निश्चय सम्यग्दर्शन भी गर्भित है।

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, पृष्ठ ३४१–३४२

उक्त निश्चयसम्यग्दर्शन ही वास्तविक सम्यग्दर्शन है; इसके बिना जिनागम में निरूपित सच्चे देव–गुरु–धर्म को माननेरूप और अन्यमत कल्पित देवादि व तत्त्वों को न माननेरूप व्यवहारसम्यग्दर्शन मात्र से कोई जीव सम्यग्दृष्टि नहीं हो जाता। अत: **स्व–पर के भेदज्ञान–सहित तत्त्वार्थ–श्रद्धान को ही सम्यग्दर्शन जानना।**

शास्त्रों में सम्यग्दर्शन के मुख्यरूप से चार लक्षण प्राप्त होते हैं।

१. सच्चे देव–शास्त्र–गुरु की श्रद्धा का नाम सम्यग्दर्शन है।

२. विपरीताभिनिवेश रहित तत्त्वार्थश्रद्धान ही सम्यग्दर्शन है।

३. आत्मश्रद्धान ही सम्यग्दर्शन है।

४. स्व–पर भेदविज्ञानपूर्वक होनेवाला आत्मानुभव ही सम्यग्दर्शन है।

वस्तुत: बात यह है कि सम्यग्दृष्टि जीव में उक्त चारों बातें ही पाई जाती हैं। वस्तुत: बात यह है कि **परद्रव्यों से भिन्न त्रिकाली ध्रुव निज भगवान आत्मा की अनुभूतिपूर्वक निजात्मा में अपनापन ही वास्तविक सम्यग्दर्शन है, निश्चयसम्यग्दर्शन है।** इसप्रकार स्व–पर भेदविज्ञानी आत्मानुभवी सम्यग्दृष्टि जीव को तत्त्वार्थश्रद्धान और सच्चे देव–शास्त्र–गुरु की श्रद्धा भी अनिवार्यरूप से होती है।

इसप्रकार भेदविज्ञानपूर्वक निजात्मा का श्रद्धान निश्चय सम्यग्दर्शन और सच्चे देव–शास्त्र–गुरु की श्रद्धा–भक्ति को व्यवहार सम्यग्दर्शन कहा जाता है। **ये निश्चय-व्यवहार – दोनों सम्यग्दर्शन एक साथ ही उत्पन्न होते हैं।**

कुछ लोग कहते हैं कि निश्चयसम्यग्दर्शन तो सातवें गुणस्थान में होता है। चौथे गुणस्थान में होनेवाले सम्यग्दर्शन तो व्यवहार सम्यग्दर्शन हैं। इसप्रकार उनके मत में व्यवहारसम्यग्दर्शन पहले और निश्चयसम्यग्दर्शन बाद में होता है।

उनसे हमारा कहना यह है कि सम्यग्दर्शन तो एक ही है। निश्चय और व्यवहार तो उसके निरूपण करनेवाली पद्धतियाँ हैं। **वास्तविक सम्यग्दर्शन निश्चयसम्यग्दर्शन है और उसके साथ अनिवार्यरूप से होनेवाला व्यवहार, व्यवहारसम्यग्दर्शन है।**

जब दो सम्यग्दर्शन हैं ही नहीं तो उनकी उत्पत्ति आगे–पीछे कैसे हो सकती है ? मैं आपसे ही पूछता हूँ कि बहू के बेटा और सास के पोता एक साथ होते हैं या आगे–पीछे ?

आगे–पीछे हो ही नहीं सकते; क्योंकि बच्चा तो एक ही पैदा हुआ है और बहू के ही हुआ है, सास के तो कुछ हुआ ही नहीं है। जो बहू का बेटा है, वही सास का पोता है।

इसीप्रकार सम्यग्दर्शन तो एक ही है, स्वभाव की अपेक्षा कथन करने पर जिसे निश्चयसम्यग्दर्शन कहते हैं; निमित्तादि की अपेक्षा उसी को व्यवहारसम्यग्दर्शन कहते हैं।

यदि निश्चयसम्यग्दर्शन को सातवें गुणस्थान से मानेंगे तो फिर क्षायिक सम्यग्दर्शन को भी व्यवहारसम्यग्दर्शन ही मानना

होगा; क्योंकि क्षायिक सम्यग्दर्शन चौथे से छठवें गुणस्थान में भी होता है। शायद, यह आपको भी स्वीकृत न होगा; क्योंकि वह क्षायिक सम्यग्दर्शन मिथ्यात्वादि सात प्रकृतियों के क्षय से होता है। जब मिथ्यात्व का पूर्णत: क्षय हो गया हो; तब भी निश्चयसम्यग्दर्शन न हो – यह बात किसी को भी कैसे स्वीकृत हो सकती है।

अरे, भाई ! सच्चे देव-शास्त्र-गुरु की सच्ची श्रद्धा भी आत्मानुभवी सम्यग्दृष्टियों को ही होती है। जिसने अभी देव-शास्त्र-गुरु के स्वरूप को समझा ही नहीं है, उसे देव-शास्त्र-गुरु की सच्ची श्रद्धा कैसे हो सकतीहै ?

सामान्यजन तो ऐसा समझते हैं कि हमें देव–शास्त्र–गुरु की श्रद्धा नहीं होती तो हम उनके दर्शन, उनकी पूजा, उनकी सेवा–शुश्रूषा क्यों करते, कैसे करते ? अत: हमें देव–शास्त्र–गुरु की सच्ची श्रद्धा तो है ही और देव–शास्त्र–गुरु की सच्ची श्रद्धा है लक्षण जिसका, ऐसा व्यवहार–सम्यग्दर्शन भी है ही। अब रही बात निश्चयसम्यग्दर्शन की; सो वह तो सातवें गुणस्थान में होता है; अत: हमें होने का प्रश्न ही नहीं उठता। अत: अब अभी तो उक्त निश्चयसम्यग्दर्शन के बारे में कुछ सोचने की, समझने की जरूरत ही नहीं है।

ध्यान रहे, मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि उन्होंने जिन्हें देव–गुरु–शास्त्र माना है, वे सच्चे देव–शास्त्र–गुरु नहीं हैं। हो सकता है कि वे सच्चे ही हों; पर बात यह है कि यह अज्ञानी जगत देव–शास्त्र–गुरु के सही स्वरूप को नहीं जानता; इसकारण उन्हें सच्चे स्वरूप की कसौटी पर कसकर स्वीकार नहीं करता, अपितु बाह्य बातों के आधार पर ही मान लेता है।

जिनकी आराधना की जा रही है, उन देव–शास्त्र–गुरु के सच्चे होने पर भी उनके सही स्वरूप से अनभिज्ञ होने के कारण आराधक की श्रद्धा सच्ची नहीं होती; इसलिए इसे व्यवहारसम्यग्दर्शन भी नहीं माना जासकता।

बस यह तो यही कहता है कि **पिछी कमण्डलवाले तुमको लाखों प्रणाम।** इसने तो गुरु की पहिचान मात्र पीछी और कमण्डल से ही की है, शेष अंतरंग गुणों से तो इसे कुछ लेना–देना ही नहीं है। यह तो बड़े ही वीतरागभाव से कहता है कि हम साधुओं में अच्छे–बुरे का भेद नहीं करते, हम अच्छे–बुरे के झगड़े में नहीं पड़ते।

हमारे लिए तो सभी अच्छे हैं, सच्चे हैं। हम तो सभी को मानते हैं। हम किसी से राग–द्वेष नहीं रखते; हम से तो सभी अच्छे ही हैं न ?

इसतरह ये लोग अपने अज्ञान को वीतरागभाव का नाम देते हैं और सही–गलत के निर्णय करने को झगड़े में पड़ना मानते हैं।

ये लोग गुरु के समान ही देव और शास्त्र के संबंध में भी कुछ नहीं समझते। **सच्चे देव वीतरागी और सर्वज्ञ होते हैं और उनकी वाणी के आधार पर बने शास्त्र वीतरागता के पोषक होते हैं – इस बात को समझने की बात तो बहुत दूर, सुनना भी नहीं चाहते; क्योंकि इस चर्चा को तो ये लोग झगड़ा मानकर बैठे हैं।**

ऐसे लोग रागी और वीतरागी देव में कोई अन्तर ही नहीं समझते।उन्हें तो जैसे अरिहंत–सिद्ध, वैसे क्षेत्रपाल–पद्मावती। इसीप्रकार वे लोगशास्त्रों में भी अन्तर नहीं समझते। उनके लिए तो सभी पुस्तकें शास्त्र ही हैं।

इसप्रकार उनके लिए तो **भगवान की पूजा–भक्ति की तो देव की श्रद्धा हो गई, शास्त्रों के छपाने या उनकी कीमत कम करने में कुछपैसा दे दिया तो शास्त्र भक्ति हो गई और मुनिराज को आहारदान दे दिया तो गुरु भक्ति हो गई तथा जो लोग ऐसा नहीं करें तो वे निगुरा हो गये।**

देव–शास्त्र–गुरु का सही स्वरूप समझने के अनिच्छुक और विषय–कषाय की वांछावाले ये लोग अनध्यवसाई किस्म के लोग हैं।

निश्चयसम्यग्दर्शन सातवें गुणस्थान में नहीं, चौथे गुणस्थान में ही हो जाता है।

उत्पत्ति की अपेक्षा से सम्यग्दर्शन के दो भेद माने गये हैं –

१. निसर्गज और २. अधिगमज।

उपदेश के निमित्त के बिना स्वभाव से ही उत्पन्न होनेवाले सम्यग्दर्शन को निसर्गज सम्यग्दर्शन और देशनालब्धिपूर्वक होनेवाले सम्यग्दर्शन को अधिगमज सम्यग्दर्शन कहते हैं।

उक्त कथन से ऐसा लगता है कि किसी–किसी को देशनालब्धि के बिना भी सम्यग्दर्शन हो सकता है; पर बात ऐसी नहीं है; क्योंकि सम्यग्दर्शन की प्राप्ति तो पंचलब्धिपूर्वक ही होती है।

बात यह है कि **जिस जीव को इसी भव में देशनालब्धि प्राप्त हुई हो, उसे प्राप्त होनेवाले सम्यग्दर्शन को अधिगमज सम्यग्दर्शन कहते हैं और जिसे पूर्व भवों में देशना उपलब्ध हो गई हो और वह स्मृतिज्ञान में सुरक्षित हो तथा स्मरण में आ जाय तो उन्हें वर्तमान में प्राप्त होनेवाले उपदेश के बिना भी सम्यग्दर्शन हो सकता है। इसप्रकार के सम्यग्दर्शन को निसर्गज सम्यग्दर्शन कहते हैं।**

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजी स्वामी के संदर्भ में भी स्थिति ऐसी ही है; क्योंकि जिन परिस्थितियों में जहाँ वे पैदा हुए थे, वहाँ सम्यग्दर्शन सहित पैदा होना तो संभव नहीं है। आठ वर्ष की उम्र के बाद उन्हें किसी ऐसे गुरु का सत्समागम प्राप्त नहीं हुआ कि जिसने उन्हें दृष्टि के विषयभूत भगवान आत्मा का स्वरूप समझाया हो।

अत: इस भव में स्वामीजी ने जो कुछ उपलब्ध किया, वह सब समयसार और मोक्षमार्गप्रकाशक के गहरे स्वाध्याय के बल पर ही स्वयं उपलब्ध किया है। विगतभव में सुने हुए और वर्तमान में पठित ज्ञान के आधार पर ही उन्होंने सम्यग्दर्शन को प्राप्त किया। (क्रमश:)

17 जुलाई 2012, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J.P.C / FN-32 / 2012-14

हार्दिक आमंत्रण

श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट मुम्बई द्वारा प्रतिवर्ष ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में लगने वाला आध्यात्मिक शिक्षण शिविर इस वर्ष दिनांक 22 जुलाई से 31 जुलाई, 2012 तक आयोजित होने जा रहा है।

आप सभी को पधारने हेतु हार्दिक आमंत्रण है।

कृपया अपने पधारने की पूर्व सूचना अवश्य देवें; ताकि आपके आवास आदि की व्यवस्था समुचित रूप से हो सके।

टोरंटो (कनाडा) में बही धर्म की गंगा

श्री अखिल भारतवर्षीय दि. जैन विद्वत्परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल देशभर में तत्त्वप्रचार करने के साथ-साथ विदेश में भी तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रचार का कार्य विगत अनेक वर्षों से कर रहे हैं। इसी क्रम में इस वर्ष भी वे लंदन व अमेरिका के अनेक नगरों के साथ-साथ टोरंटो (कनाडा) भी गये, जहाँ प्रवचनसार की गाथा 94 के आधार पर प्रवचनों का लाभ तत्त्वरसिक जिज्ञासु साधर्मियों को प्राप्त हुआ।

डॉ. भारिल्ल के अतिरिक्त पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली भी टोरंटो (कनाडा) गये, जहाँ उन्होंने मोक्षमार्गप्रकाशक के व्यवहाराभासी प्रकरण पर प्रवचन किये।

इस वर्ष पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर को भी विदेश में तत्त्वप्रचार हेतु गये हुये हैं। इस क्रम में वे अमेरिका के अनेक नगरों के साथ-साथ टोरंटो (कनाडा) भी गये, जहाँ उनके निश्चय-व्यवहार एवं तीन लोक विषय पर व्याख्यान हुये।

परीक्षा तिथि निश्चित - प्रवेश फार्म शीघ्र भेजें

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड, ए-4, बापूनगर, जयपुर 302015 (राज.) की ग्रीष्मकालीन परीक्षायें क्रमश: 25,26,27 अगस्त को होना निश्चित किया गया है, जिसका विस्तृत परीक्षा कार्यक्रम 2 जुलाई के अंक में प्रकाशित किया जा चुका है। जिन सम्बन्धित परीक्षा केन्द्रों ने अभी तक छात्र परीक्षा प्रवेश फार्म भरकर नहीं भिजवाये हैं, कृपया वे तत्काल भिजवा देवें। **- ओ.पी.आचार्य (प्रबंधक)**

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

दशलक्षण पर्व हेतु आमंत्रण शीघ्र भेजें !

दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रवचनार्थ विद्वानों को बुलाने हेतु पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को आमंत्रण -पत्र समाज/मंदिर/संस्था के लेटर पेड पर शीघ्र भेजें; ताकि समय रहते उचित व्यवस्था की जा सके।

पत्र में अपना पूर्ण पता (पिनकोड सहित) एवं फोन नं. (एस.टी.डी. कोड सहित) अवश्य लिखें। संपर्क की सुविधा हेतु ई-मेल एड्रेस हो तो अवश्य भेज देवें।

- मंत्री, टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर

पत्राचार का पता - **दशलक्षण पर्व व्यवस्था विभाग,**
ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर (राज.) फोन नं.-0141-2705581, 2707458,
फैक्स- 0141 - 2704127
E-mail : ptstjaipur@yahoo.com

प्रकाशन तिथि : 13 जुलाई 2012

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127